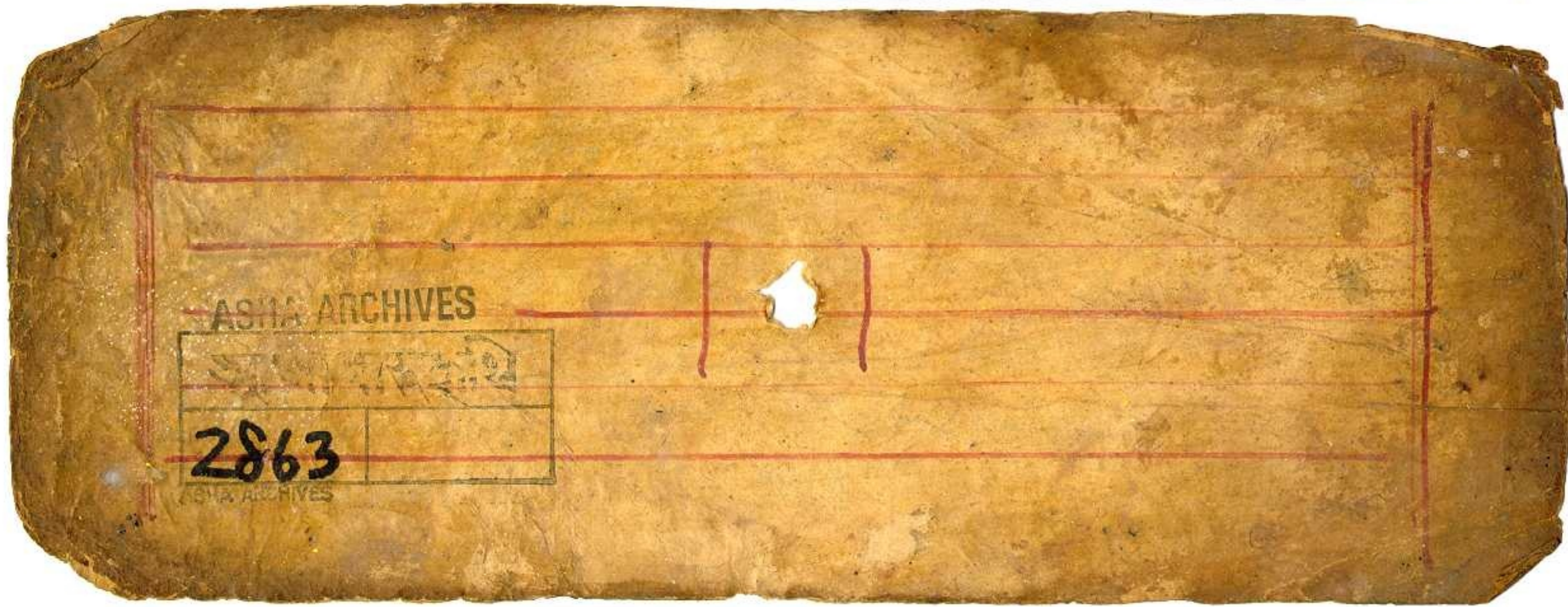


2863



ASHA ARCHIVES

2863

ASHA ARCHIVES

२०११

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

श्रीसद्गुरुसर्वकाले ॥ ओं नमः श्रीचक्रसम्प्राय ॥ १ ॥ ओं नमः श्रीचक्रसम्प्राय ॥
 २ ॥ ॥ गंगा ॥ गङ्गा देवि ॥ ॥ ओं नमः श्रीचक्रसम्प्राय ॥ ॥ जाओ ॥ ॥
 धर्मबालुजितहृदयातन्यकालिका ॥ ॥ कोला ॥ ॥ जगदालोकलीच
 तः ॥ ॥ जाओ ॥ ॥ कमलासनस्थस ॥ ॥ निर्वर्णयशकलीकमल ॥ ॥ कोला
 ॥ ॥ सहजानन्दकालिका ॥ ॥ जाओ ॥ ॥ तिष्ठितजितहृदयाज्ञादसूयत्री ॥ ॥ को
 ला ॥ ॥ नरुतमेशकुमारा ॥ ॥ लाकजाओ ॥ ॥ ताल ॥ ॥ चउमौ ॥ ॥ विष्णुसलोचन

विन्दुविन्दाङ्काविविपायितुसंरुवा ॥ ५ ॥ तमामिउवागीश्वरस्यवस
 तिहृदया २ विरासपि कृतागवमताहवस्यवजिनहृदया ॥ ॥ योतनोल
 वससिगवयम २ पंचजिनमकटम ॥ सिलयन ॥ ॥ धर्मचक्रमज २
 कलिगमत्रासि २ चक्षवापयिषा ॥ ॥ सुवस्मते ॥ ॥ सुत्रासुलनमि
 तवचचक्ष २ हतपिषवमादिवज्जिनगुसलयन ॥ ॥ २२५५५५ ॥

॥ ॥ रागागतेवविगममममममनिकर्तृहृकवाजिनपर्वदिदहजम
 दिपं २ अपवरमदायदीडरुवक्रयुहवमपकंवर्धपकंजिनचापिया
 प्रग ५ ॥ तममपकंवर्धविस ॥ ॥ ५५ ॥ जिर्नविग्वहनविग्वहनप
 कंसवृष्टि २ अष्टदिपानत्रावहनिकिजिनमानसाहयकुरुयत्रिमिलघनधा
 वयुपग २ ॥ ज्ञानवदानमयाउपदिपं ॥ ॥ उपदिपत्रिजातुध्वानेरसम

॥ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥

नत्राउपदिपकउ विदिगंरुवभःअउपदिपथीखनुपत्रमु॥ ३ ॥दिन
 दववपाचियनत्रप्रधिययाचियसफअक्षदत्रप्रवियात्रश्रवत्रयाउ
 दिवियसायकचकामनिक्लनि धिनिखिलवदयक्ति॥ ४ ॥
 गुयत्रप्रदागिवत्रसाहवतिपत्रीरावनामत्रकुसुमउदकपत्रिसीहलीप
 ऊशुभभवयत्रिरात्रधिसफपत्रिरुषिर्नरवकुलनिधिसंगत्रलस्यकुमु

तं॥ ॥ ६० ॥आग॥हेत्रवि॥ ॥तिर्मातादिबहुषष्टिदयसरा
 ब्रह्मराखगककादिब्रह्मतादयपी २ समीत्रपुत्रिललि ताईगासिनीतत्रनी
 लसहापत्रकलवपि॥ क ॥ ॥अत्रमामिदवीथीवकुविरासिनी
 फिहवह्वसीवसमहानदवी २ अ ॥ दिशानपलुगीविकामयपथीह
 तनुविमुक्तमलुलनेययक्ति॥ ॥वसुदयसरावह्वराधर्मवकषाठकाद
 लसहागावर्क २ दार्दिगतदलकमलमहासुखवकहंकायवपथीहवकता

२ तिर्मातादि ॥

२ स्वर्गयोगिनि भंड

यग ॥ दहयिजितविद्यादि तिकयाहंदि तिआवयिमु न व्यायया ताद
 वृयो १ यो ॥ यदिदधरु मिसग कप ऊनो कित हान दा यितो वी प्रध्वयो ॥
 ॥ दयस युति विव ऊल ऊननु ॥ अहिति मिस सय न व ऊ दवी
 १ ऊन ऊन माय ऊरु पाय यथा सा ॥ गतिना मत मा ऊ दा ता ॥
 ॥ गगा क र्क दी ॥ ॥ श्व दया गिनी दवी गि रुव न या पिनी श्वि प्र सा व इ वृ द
 र्य वि ता सिनी ॥ ॥ ॥ गत मा मि १ श्री व ऊ वा ग हि १ म डि सि डि जय नी ऊ ग क ऊ न नी

卷之五

[illegible]

सुननुचय (म. गी. ल. ध. र्थ. र. न. शि. गी. मा. गी. वि. भ. क. लि. भ. २. दान. प. ति. र्थ.)
 सभा हर्ष. सद. म. ल. आ. धि. ना. ॥ ७ ॥ १६०३ ॥ १. आ. ग. ध. ना. गी. रा. स. वी.
 को. ना. म. हा. स. र. व. क. दि. या. व. उ. ॥ १६०३ ॥ २. आ. न. द. द. हा. र. वि. लु. व. न. र. व. शि.
 या. म. हा. स. र. व. ना. या. व. उ. स. र्थ. द. शि. म. प्रि. या. रा. ॥ ३. न. पा. प. वि. ल. न. प. म. र्थ.
 श्री. हा. : वि. लु. व. न. न. क. स. न. र्थ. पी. २. स. र्थ. वि. क. ल्प. : वि. ध. म. नि. द. वी. न. न. र्थ. व. हा.

न. व. ल. द. अ. य. नी. रा. २ ॥ १. न. मि. ता. र. म. ल. उ. द. या. व. धि. ति. : क. ल्प. न. व. मि. वी. व.
 धा. नी. र. क. व. मि. प. ल्प. व. र. व. हा. क. धा. नी. : उ. हा. हा. व. व. द. हा. ॥ ३ ॥ १. दि. रा. म्भ. व. म.
 क. र्थ. क. मा. : व. कि. क. ल. क. मि. धा. नी. ॥ ४ ॥ १. व. क. म. स. ल. पा. य. ल. धा. नी. : यी. ॥
 न. व. उ. न. ल. सिल. मा. ला. ॥ ४ ॥ १. स. र्थ. म. थ. ग. न. उ. न. नि. द. वी. वि. व. दि. त. ल. व.
 न. ल. व. र्थ. व. क. या. गि. नी. व. म. गी. ली. ग. न. ध. वि. या. र. म. व. कि. स. म. व. स. व. जा. रा. ॥

२५६

रा०६०॥ गारवावावामकप्रिगाहं हं हं द हं धूः संसावनतत्र २ हं अत्रिं गमयाग
धवूग ॥ ॐ महवज्जुगुमगनाहं रं नानं नं हं हं हं ॥ २ ॥ सूपनप्रवचिन
वयराधवृक्षसमविप्रपनदहध ॥ ३ ॥ रावावविमकूटविम
धगुसंकुतायिरनमः हं नमः हं ग्रीहं वज्जुगुहापुषयीग ॥ ४ ॥ रा०६०॥ गार
रवागविलासगाडदितातत्रयियाः पवनइना २ वसूं ये हं दामककागललिता

५२

१३ दिनाः १३

॥ १ ॥ अथोद्देश्यवद्विषयसन्निविताश्चर्यवर्णनप्रसङ्गानामुक्तलक्षणानि ॥
२ ॥ अदिनकल्पमगुलमध्यगताश्चर्यवर्णनप्रसङ्गानामुक्तलक्षणानि ॥ ३ ॥
द्वयज्जालिगमपुनिनिहकार ॥ ४ ॥ अदिनकल्पमगुलमध्यगताश्चर्यवर्णनप्रसङ्गानामुक्तलक्षणानि ॥
५ ॥ अदिनकल्पमगुलमध्यगताश्चर्यवर्णनप्रसङ्गानामुक्तलक्षणानि ॥ ६ ॥
७ ॥ अदिनकल्पमगुलमध्यगताश्चर्यवर्णनप्रसङ्गानामुक्तलक्षणानि ॥ ८ ॥
९ ॥ अदिनकल्पमगुलमध्यगताश्चर्यवर्णनप्रसङ्गानामुक्तलक्षणानि ॥ १० ॥

२ गङ्गाजिनः १४

मं. अर्द्धवाङ्मसूक्तमिच्छाप्रणिशुभा. वामखर्दंगकपाया ॥ ३ ॥ गणीः ॥
सम्भवयाया. वाङ्मलिगुम्फाङ्गुलिना ॥ मालयिप्रवापयियाय. सासुतवकुम्फ
मिद्धिनाग २ ॥ पापासुवक्रमुड ॥ ॥ वाममहात्यधत्रीयाचउनलसि
माला २ नीलहलिनलाहिग. कनकाहवस्तउमुखअतिविसवा ॥ ३ ॥ गणी
लिधर्जापे लेवववापयियाय. कालिवागि विरुम्फा २ विरुम्फा २ विरुम्फा २ विरुम्फा २

93

१॥ विस्वयः १॥

[illegible]

रागि वरः प १६

॥ गिलससिन्द्रकर्जवस्तु लारकलुत्रिकयुग्मा म्प्रसूखमपि ॥ ४ ॥ ह
नयिसूत्रमवज्वाह विद्यासा रशावजद विप्रसादः श्रीहृदयपाया ॥ ५ ॥ ॥ ॥

राग नाट ॥ कात्रिवयसवापयि । चवृमात्रा २ अक्षवद न प्रतिसूत्रनिन १६
यना ॥ ७ ॥ नाचयि हवजनेवात्मादवीसहिता २ अक्षया गिनीलेया पत्रमनया ॥
॥ २ ॥ कृष्णवर्णः पादगजुज हव १ म २ व्याघ्रवर्मिषत्री पिङ्गवर्कमा ॥ ३ ॥ चक्रि

उत्तरागर्कः प २०

कृष्णवर्क मित्रावकमषया श्विचुतिनी लुचितमप्रियं आवकमा ॥ ४ ॥ गमदपि
पत्रमनसः सहजानन्दः प्रिचुवनमवयाव नुकमर्हि ॥ ५ ॥ ॥ ॥ **राग ग**
जहली ॥ उर्वरा हव मशीवितन न
मा ॥ ७ ॥ जगमनर्क पक्रियागुम ॥ १ ॥ माता २ हनु नीलवृत्तिर्पिगलक
दवी २ दूहमात्रविनामनीदवीत २
॥ वकनयनप्रिमिबुमाला २ अक्षकलिकया नीलायत्र ॥ ३ ॥ व्याघ्रवर्मिष
यस्यालीछा २ सर्वलभ्यादयमवाकाका ॥ ४ ॥ चवनमप्रयशी डगुमात्रीविमा

१ विविदि विः २०

नाग ॐ ॥ १०३ ॥ १ ॥ **याग गन्धर्व** ॥ **वी** ॥ विविहं विहं नू पमाल विमभीमदन
 रदवाभुयगद्युवनहनुकर्त्तये ॥ ॐ ॥ नाययिपुक्षमा मिथीसन्धयवीलाश्वज
 यागिनीयतिप्रसमयसंतावग २ ॥ वजवायाहित्रालिङ्गनेक ६२३३
 मंविप्रविप्रध्वनसमयसंग्रजा ॥ ३ ॥ रागकृदक्षविंदमासगुलकृदक्ष
 पूषाद्रवलायवीषयकि ॥ ४ ॥ द्वादसलुजध्विचउवद ६२३३ निलसंतावग
 गद्यगुरुविना ॥ ॐ ॥ १०४ ॥ १ ॥ **याग गन्धर्व** ॥ **वी** ॥ निम्नायचिचतुःषष्टिदय

九

निर्माणादिः पृ २९

सुखाय हसमध्वगमकादिवृत्तनादवृषीरसमिलयपुनललितार्द्धममिनिनवनि
लसुगोपपद्मलनादवृषी॥ ७ ॥ ॐ नमामिद्वीशोवज्रविनामिनीगिरिवह्व
नःषसमह्वानदवीरडादियानपूर्य
मनुलनल्ययक्ति॥ २ ॥ वसुदल
जसंतागवर्कश्रवागिसनदलकमलमस्तसुखवर्कहंकावपुगीहवृकनाथ॥
॥ ३ ॥ दहतिजिनविशारिद्रिनयाहंमिशवगुप्तमध्वनादवृषीरपी॥

२४८ आनिनीः पृ २९

दिदमरुमिगतसुगतपूजनीं जिनहानदायनीवीयम्बनी ॥ ४ ॥ दध्यं
पुनर्विम्बुलजवन्धायमन्त्रहिनीसिसुसवन्त्रुदवीरजमजमन्त्रुपायस
नक्षत्रं जनिनाशनमाकृष्य दाना ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
॥ अथ योगिनीयवीर्युत्तुवन्त्रयापि ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
नी ॥ ९ ॥ अथ योगिनीयवीर्युत्तुवन्त्रयापि ॥ १० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
॥ १२ ॥ पूर्वदिनगतं नक्षत्रं वृश्चिकं गीर्वाणं नक्षत्रं योगिनीयवीर्युत्तुवन्त्रयापि ॥ १३ ॥

ॐ आः नः ॥ २३

[illegible]

२ अवनितिनिहिततामजानः पृथक्

सहकृतसमयकचिरुविमदकधर्मं महावागडावि सुयवाधिविरुपं समयस
ल्लहानयकयतिउर्न ॥ १ ॥ ८८०१ ॥

वामजानुप्रवृत्तकिञ्चलमालमकु

हवमलायात्रचलविवा ॥ ७ ॥ नमामिगीचलमथापनाजातमकुहयकुदिता
रविभ्रमराथविभ्रवापितविलं विक्रममहाकोटयाया ॥ २ ॥ अतिरिखना

१ वागकाभाउ ॥ अवनितिनिहितः

साश्वागडसमाहवदिपामति

२६

२ अतिरिखनाः पृथक्

दडर्पुवद्याडहकवायाविश्रुतिकिञ्चलशीदितात्रधवाककनधयक्षवेविमं
नामावाडवहमप्रक्ष ॥ ३ ॥ माधवमायापर्वधप्रवकात्रुपिभायापादश्रुतव

क्ष २ समयसमायात्रागविभास्तहान

प्रक्षपुह्रितमोत्रिकयप्रनोपयव

चप्रक्षयायसुयवप्रचलविवा ॥ ४ ॥ ८८०२ ॥

कुलुलकलीयायकमाप्ररुषिगुंगेसंकनोदिवेधूया ॥ गीयप्रोडनलसिच

वायासमाहितदहा ॥ ५ ॥ यत्तार

समर्धकावाश्मयनयनागवदिन

१ वागगवउगी ॥ चकि

माता २ मित्र च किंचिदयि या रुस ह सि न गगन क नादिव न्धु प्रियाया ॥ ५ ॥
 पुरस गी ह नूतान् माय को नाया रु १४ न धी म न्धु व लाया ॥ २ ॥ वज्र क ना
 क हा र थ य प्रिया क र न्धु क्रिया उ म्ब वा ह २ स हू त आ गि नि क म ल वि
 हा सिं ह न म हा स ख म प्रि पु सा द ॥ ३ ॥ वज्र वा या हि आ लि क म स न्ध २५
 न ना व यि व ह वि ह ल त रु २ वा क्क लि को ले या कि द किं ह नू व अ र्द्ध र डी हू न य
 सा द ॥ ४ ॥ स ह ज स र्द्ध लि ले या ग व कि क र्द्ध पा य गी ह नू व अ र्द्ध र डी हू न य

पुस्तक आलिङ्गन की द कि ह नू व अ विलास यि स न्ध क नू म ॥ ५ ॥ १०३३ ॥ १ ॥
 र वा ग ना डि ग र स च त्वा रिं स त प न्न व म म्भ ह वि ज क्क अ र्द्ध स्या सा र्द्ध द हा र नी ल ह
 वि ग न्ध क पि त व र्द्ध ता स फ द म म्भ ५ क य वा स न्ध ना ५ ५ न मा मि आ
 सिं ह न यि म हा स म्भ वा व ज वा या दी गु न्ध ना क नू स ख न र ति व न उ र्द्ध ह ग
 र्द्ध नि ता वि स व र्द्ध र्द्ध नू व र्द्ध स फ गु जा ॥ २ ॥ पु थ स प र्द्ध व ज जी हू न ना मा प ति सा
 य ज कि नी व ज ज का कि २ दि ति य आ का स वा य म द नी हू कि न्ध यी या गि नी स वा

१०३३
 पुस्तक
 आलिङ्गन
 की द कि
 ह नू व अ
 विलास
 यि स न्ध
 क नू म

निदधियमः ५२८

काका॥ ३ ॥ हतियवरुत्रिजलहानदवीनिवेदकहसुकन्यादिधना २
चनुयमुवतुविलवाग्लायनागीत्रससीत्यधकचनुमननाथा॥ ४ ॥ चनुउमः
सहस्रवाधिसत्ववितादाप्रधाउसः
शुभपदकिनागुत्पादसिल्वधतः
रामागमज्ञाउ॥ नालमप॥ निठतिषत्रसमहासहस्रउ २ विविधिवाद्यमन्त्रजा
दयक्रि॥ कमलकुलिसः अनुजविलावितं २ मनुजापजात्रिमूः जादयक्रि॥ • ॥

戲

१८५५

[illegible]

हे कालसंज्ञा नः प २०

हे कालसंज्ञा नः ॐ नमिलसमयति दहाश्या काल कलनसमयति काला समाक
लो ॥ ॐ ॥ अथ नु अचलः नृभगमयति इव अपागमकलधारी २ जगत नाथ ३
मनपालितमहाकाटवाया ॥ २ ॥ अवनितिहितवामजान् ध्यायवद
क्षयिलायसाश्चकवाकमरुचरयं कयः अज्विलविघ्ननिर्दिता ॥ ३ ॥
बुद्धहविह्वमघवमायुदपदमस्तु विद्याश्च दृष्टानि पीदिता ध्वसदकिवस्तः
विघ्नहना ॥ ४ ॥ विविधिवत् अहयवतिरुषिर्दिव्ययत्नसमीली २ जगत

२०

अथ पक्षे नः प ३९

विवाहिनः सर्वसंपत्तिविवत्रदायक ॥ ॐ ॥ अथ पक्षे नः ॐ ॥ अथ पक्षे नः ॐ ॥
अलपकं नमईह कुमाला २ गभधयकित्र नसंकासदहा ॥ ॐ ॥ अथ पक्षे नः ॐ ॥
पंरुवत्रवापिना २ ॥ अथ पक्षे नः ॐ ॥ अथ पक्षे नः ॐ ॥
धयसुत्रं गुत्रवाया २ पक्षपणानसं ॥ अथ पक्षे नः ॐ ॥
यवनूभयप्रविश्वकुमालदय्यवानपहाया ॥ ४ ॥ अथ पक्षे नः ॐ ॥
नहदया २ अहिसनसुअरुलवलपदागा ॥ ॐ ॥ अथ पक्षे नः ॐ ॥

२ वा म व ट य नः पु ३२

१॥ श्यामगजवड्या ॥ १॥ वामघटपत्रधनुदहिनकचर्हि २॥ पायत्रसत्रनडलमूल
 मालारूपिमा ॥ ३॥ अदिबीनाचयिनुकजटिवजयागिनी २॥ निनिननुदवीनि
 हवनपयिमा ॥ २॥ गकालमूल ॥ ३॥ दयिपासत्रवन्धियात्र २॥ श्यामगडवः
 मोहकर्हिनक्रदिना ॥ ३॥ ॥ ४॥ लसकदवीनिर्वजनदस्य २॥ गुन्य
 पात्रदवीगुन्यस्वराव ॥ ४॥ ॥ गृष्टिसंज्ञात्रयायाकचूडादवी २॥ माक्रमागद
 वी ॥ निहवनजननि ॥ ५॥ ॥ ८८०३॥ ॥ श्यामघनाथी ॥ गजमूषनिनय
 दवी

१५३४६०

निनादस्वपत्रवत्रनित्याधिपनिगच्छन्धवा २ मत्रिमृकायत्नाहत्रह्यतत्रसिक्कि
यत्रसंकासा ॥ ७ ॥ मात्रियाविष्मा मात्रियादर्प्य मात्रियाइःस्वविनासर्न २
मात्रियायाया, मा ल स न्द्रासा म्यत्र
वात्रा, क स व ज स्वक्क हि मि न पा ल द
ष प ल क र हि वा म ॥ ३ ॥ विविगुवसुकवृथिवभाऊर्नो क स सि म सि न
२ व भ्वा द व ध न ल भ्वा द व भा रा पा य र मि वि मि वि वा ऊ न्क ॥ ४ ॥ व त्वा न व

१ सकनडा: १ ३५

उरउमावाश्मालविष्णुदुर्गिसुहृदयहवसा ४ ॥ निविधित्वत्तमोविर्ल
कनदहाश्जगतविवाहिनंवलहलदायकं ॥ ७ ॥ ६०३ ॥ **१ वागनाट**
॥ सकनजगतगुप्तः समनवीवा २ ॥ अनूपमकवृक्षकवहिसूषविना २३
॥ ७ ॥ **॥ समनसमनवद्वमायिता** ॥ पंरतिविधिविकल्पविनासमनव
टा ॥ २ ॥ दविवावाहिकुक्रमशितदहाश्तवलयदहसविभाप्रविभाषा ॥
॥ ३ ॥ **॥ सकलविष्णुदुर्गिसमनितनिरुग्मश्चतिपमिः सुम्ननिवासनवस्थ**

२ सकनगपाते: ३५

॥ ४ ॥ **॥ लायतावकनहनिमनिरुग्मश्चनूपमसमनवसमग्रसूषविली ॥ ७ ॥**
॥ ६०३ ॥ **॥ १ वागनाट** ॥ अनूपमसमनवसमग्रसूषविली ॥ ७ ॥
वदनंश्चगगलभाषवगगलवर्नम ॥ नकायागगलउमवजघनिः
वाजियात्र ॥ ७ ॥ **॥ हूँ हूँ नमामि** ॥ केजकिनीपंचकतिनिहानज
किनीसवमशरगह ॥ २ ॥ **॥ पूर्वउरुपश्चिमदक्षिणवतुषुवमविष्णु**
मावविष्णुद्विदिशात्रश्चकिनीद्विपिनीचरसिकवाजननिधायवतावसेनाः

१ जिनव नन नः ३८

सवदनि॥ ३ ॥ सिधिमिन्वापिमिज्जम्कडनाकिनी स्वर्त्ती गरुणात्रपव
गर्ज्जकसहस्रं २ वज्रजकिष्ठी धाववनालजकिष्ठी वभ्रजकिष्ठी वहुवद
वी॥ ४ ॥ जिनऊननी देवीज किनी गुरुपाय सप्रर्ष पञ्चमूडा
वम्हवित्पिनी २ ज्वरु रुटक वज्र घनखली रण पात्र पत्र मग्धवीः
होन देवी॥ ५ ॥ १६०३ ॥ १ ॥ **गामासकलि** ॥ जिनव नन नयती, सुवनका
पानल, निवासन, निर्मलमनिना २ नेपाहम गुलमाभ नसिह न किल (गजरा

२३

गमगुलमाभमनिना॥ ६ ॥ **गिजागतिगक्रिया** २ नूवना वया २ देवेषु
मामि, वृममल्ल लोक ग्वद वं २ सिद्धायागि वन्दरु पत्रिकमनाया, सुवनप
निज्जममि न २ ५ देव॥ २ ॥ वागिकमल विन्वका भित्ति बाधि
या २ नामकमल धव हाथ २ गुम समत्र न्नी गकू रक दात्रिड २
ज्वरुयह वध॥ ३ ॥ **हँ हँ हँ** गवनि कायाह किन मामि श्री वृममल्ल लोक
ग्वद वं २ न मामि २ श्री न २ ५ देव, ग्वर्ज्जमधपाना वद वं॥ ४ ॥ दमहमि

२५ नानिदं नः पृथक्

हा प्रिभनवकृतवायाङ्गनाथञ्जयदाकाश्रीअमिताहभिप्रंगतधवि
याणीलाकेभवस्रवक्षामिरियं॥ अ ॥ ८६०३॥ १ नागमत्रिलि॥ भून्वाः
निर्जर्जनपत्रपुरःभून्वमायसंसा वस्तुवद्विवर्यसंसावैअन्नाना
सिद्धयीजावू॥ अ ॥ उल्लदनड निर्घाननहिः नृहसासंसंसावऊ
आलवयीमनेलावयीसापत्रसाहयीकडी॥ २ ॥ अक्रवमकुविवकायाः
नासाविन्दनचिरुश्चहसावत्रममसासुसाभाहदिनचिरु॥ ३ ॥ जिमप

[illegible]

१ अथ यनि नै ज न प ३०

पथमकवधयवजद्यलधवमूजात्रालिंगाद्यवाजिना २ दीनियकृगधवृतिनियः
 हानरुचवदुधध्वजसव्यकवधवा ॥ ३ ॥ सूरुवतुजपासहवधधर्मवायवतु
 र्थवामधनपूरुकाश्चसमकृतसि पुकलिधलिषधमध्वरुविपवा
 ॥ ४ ॥ निवृद्धिवृद्धिदायिप्रमिण अमितामर्वहृहानविएसागवा २
 यरुसत्रनस्रधगतिपत्रौदिवंजजन्मने ॥ ५ ॥ ॐ ॥ १ वागनिवृद्धि ॥
 अखयनिर्जन्मजद्वयअनूपमगवाहकमलजसाधना २ भूनाताविवासीनलाय

२५
२५

आविर्यीदवंप्रातविन्दसमकलिता ॥ अ ॥ नमामिनितालकनिलकलल
 लावहृगुद्वनसंवापिता २ सवदचनुसमनजप्रकासिता जत्रजचनुवापिता ॥
 ॥ २ ॥ खज्जोगमंववसाधिवच कवर्हिमवृत्तुलतमविष्ठा २ निर्म
 लहृदयानवकध्वापिर्नजहंनिमि कचलजतमयसाधिना ॥ ३ ॥ अ
 नन्दपत्रमानन्दविप्रसाहृजाचनुवाननुजर्मरवाश्चपत्रमाविप्रसाध्यनद्धादिव
 मलासखसृगनसंययापिता ॥ ४ ॥ हवजकात्रवकुशीवजसमवृज्जनककादि

श्रीमर्कनाथः पृ ४३

एवागकचुदि॥ श्रीमर्कनाथवल
धारीनागवासदरूप॥ ॐ ॥ न
लजगनगुः सुवनवापिना॥ २ ॥ परकधनसवपमगुः रायाश्रीधर्म
धारुधमः नपालमगुः वलंकता॥ ३ ॥ जगननाथजगननिर्जकनवायाश

महाचिन्मविजयाश्चन्द्रहासवज्र
मामिश्रीमर्कनाथमाश्रयगदिम्ब
मापुत्रितउधविता॥ २ ॥ दहि
रसममगुलमापुत्रितथिना
॥ ३ ॥ मृत्सिंहसालवायाविम्बविर्यापिताश्चक्रलयवहव्याधिदलितह
नना॥ ४ ॥ वज्रधवपुमादिलेकासहनव्याश्रयववनमायसिद्धिवनपुसा

३६

पुत्रवदननलिः पृ ४४

वसामुविमालपलितनिर्जकना॥ ४ ॥ ८८०३ ॥ १वागमलादेवानकवदन
वलमकटजालंकताश्चन्द्रजगवज्रपुसकसवधनूधविता॥ ॐ ॥ नमामि
मर्कश्रीपद्मनित्यम्बवाश्रयनत्रा
नशीः गद्यपतिवामशीमहाकाल
॥ ३ ॥ मृत्सिंहसालवायाविम्बविर्यापिताश्चक्रलयवहव्याधिदलितह
नना॥ ४ ॥ वज्रधवपुमादिलेकासहनव्याश्रयववनमायसिद्धिवनपुसा

महाचिन्मविजयाश्चन्द्रहासवज्र
मामिश्रीमर्कनाथमाश्रयगदिम्ब
मापुत्रितउधविता॥ २ ॥ दहि
रसममगुलमापुत्रितथिना
॥ ३ ॥ मृत्सिंहसालवायाविम्बविर्यापिताश्चक्रलयवहव्याधिदलितह
नना॥ ४ ॥ वज्रधवपुमादिलेकासहनव्याश्रयववनमायसिद्धिवनपुसा

कमलविकसितः २४७

दावा ज रा ६०३॥ ० रा रागनिप्रवदि ॥ कमलविकसितधितियलासवः
कमलुपियदर्थममदहाश्चतुवदमः कुवययदमः पयनित्यपुकासिना ॥ ३॥
नमामिश्महामर्षी सकप्रगुहाः वायुलुगुत्र २ कुम्भिनिदहनहा ३२
नवलपदसर्वहानसिद्धिपात्रिता ॥ २ ॥ प्रथमकनदयवजघला
धनमूजाश्रालिङ्गताजिताश्चिदित्यकसधनः रुनियहानस्कंधः चतुर्थज्वर
सव्यवलधवा ॥ ३ ॥ मूलयजुजपाभः पुवप्रधर्मापचतुथवामधनः पूरुकर

त्रिदशकमनः २४८

श्चतुसकटशीपकालिनकिविश्वतमध्वगतचिवला ॥ ४ ॥ निवृद्धिवृद्धि
हायिचामिगुनामिगुसर्वरुहानविपसागवाश्चक्रसचनः सवनागतिपत्रमा
दिववजकुलमव्य ॥ ज रा ६०३॥ ० रा रागविलासः ॥ निदलकमल
वर्षः कससर्षकमधुकवहः नृजवि नाश्रीवि। वृषाकृद्वर्गमूखदवी
भठमपायवापिता ॥ ५ ॥ नमामिभैवात्मात्रिपुवनमातावच्छादवीशीम
गस्तुत्रिशययसनासलवदिनचनर्षः नगमाधिसिद्धिवत्रपुसाता ॥ २ ॥

२ श्री हवजने गाला प ५१

नन्दनवमिचन्दनगलवञ्जनेमक्रसमपालिजामवञ्ज २ नित्यंगगममवागमति
नित्येञ्जनेतिथेसुलक्रवञ्जने ॥ ३ ॥ अष्टहैवञ्ज अष्टयानिहोदवी अङ्ग
दवा सुवक्रगुपाल २ अष्टसहस्ररूप इजिमित्रवावृनिअनगविष्टनि
ववालवञ्ज ॥ ४ ॥ विस्वविद्यापि ननावृनिदविअवयनिर्वञ्जना
निमय २ अहिस्मन्तुसुवक्रदायनिदवी जत्मजलमगुह्यायसल ॥ ५ ॥ ज
॥ ६ ॥ १ गगकलदि ॥ श्री हवजने गाला देवी ति तुवनप २ च विनया

३३
२८

१ विदपपमः प ५६

गपञ्चवर्कदहा ॥ ७ ॥ नमामि २ श्री पूछागनचैत्यरहंरकशीगुक्कभविचञ्ज
शांगिनिसूचन ॥ २ ॥ पूर्वदिगलिनेहिवनीवर्गददिनपातुधात्रिवाम
विन्दुधरा ॥ ३ ॥ अस्मविशेषा गिनीदेवी २ गगञ्जनिनिवावञ्ज
हं कालसंज्ञान ॥ ४ ॥ ॥ ६ ॥ १ गगगन्धहैववि ॥ विदपपमगु
अमहुलमहासुवक्र २ देवीवञ्जवाहिनीगगहानवञ्ज ॥ ५ ॥ पिडायित्र
महावसुगवक्रदह ० ॥ अमक्रमासुसुखडधनार्थ ॥ ६ ॥ वञ्जवावाहीअ

१८ दया निधिः पू ७९

१॥ वागनात ॥ उदयागि विगलमियिकासा २॥ कृपिसकयात कथा विनदवी ॥ गु
 क्रदवीर्नदितविशाधनीदवी ॥ २॥ ॥ त्वंदविशिनुडवमुणुकुपक्रदरु २॥ गुक्र
 दवीनकाकसर्वदवीनर्वदिनं ॥ गुक्र ॥ दवीलकलविशाधनीदवी ॥ ३॥
 मनुआनुनसगिनुवनवदि २॥ गुक्रद ॥ वीवासासिनिवृद्धजकिनिदवी ॥ गु
 क्रदविदिवाका २॥ विशाधनिदवी ॥ ४॥ ॥ उँकालवजसंक्रुतुरुपिया २॥ गुक्रदवि
 नविससिविशाधनीदवि ॥ गुक्रदविमलितविशाधनीदवी ॥ ५॥ ॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥

३३

२५३॥

॥ रागा ॥ ललित ॥ ॥ नृत्तरुद्राक्षतार्वाकात्रसम्भुवत्रविहितवित्ति
 रुकलसं २३ ॥ ४ ॥ हंकाप्रवजामरसदकसफसी ॥ अक्षितसुतमृतायं ॥
 ॥ चन्द्रामरसवाधिसुल ॥ दायकं सर्वजिनयापितसहजक
 ॥ १ ॥ जगत्तत्र ॥ अक्षकवृत्त्यता ॥ कवृत्तावसेसात्रतागतवित्र
 ॥ १ ॥ ॥ वज्रपत्रमासवर्गधीवृत्तियकं ॥ अक्षितपक्षपीयर्षी १
 ॥ हंकात्रमनुपप्यसम्भुवजसम्भुपितविपाहुकलभा ॥ ॥ अक्षितसुतमृतायं ॥

37

सात्रहृदनिमृकटकादिगान्तराश्च १५ सात्रहृदनिमृकटकादिगान्तराश्च १५

...सामान्यतया नैव गच्छति ननु सा च त्वया गच्छति का ह्येव वा

बु ॥ दवीक वृष्यदुलिय किमिति दु इ रायत सात्रि रा २ दहिति नालि दामा ह
 ध्रुवसि विरा ला छिनि नयन नूति गा व वा ॥ ॥ मिय सूत्र त म सुल मा ण व ग मि
 नहि ना पा न गु थ्य ध्रुव सि त व क म्या ॥ २ क र टि व र व र व द्वा क न क मा व
 पं स गि व र त म क र क स क पा र ॥ ॥ व र त थ ग र द ह सि व उ
 द वि क यि ए म सि ति वि ड पा न ति ज य २ उ ग र मा व त व न स य र उ गु मा त ए
 हि स्य मा पि न हि क र ड य ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ रा गा ॥ र व वि ॥ ॥ व सु ग म म

नसिलि व वृ डा वा स कि ता ग र र्जि त म घा २ ग क र म म त न व क र ड य
 ति क र म घा त क क ता ग ॥ ७७ ॥ ॥ वृ द य म ड ल य क र व क्ति वा य रा क स
 दि र वि दि र व लि द व ति ल २ न र ॥ ॥ म म त रू डि र वी य र वी ता व यि
 स रू जा त न द व ॥ ॥ र्क क यि धा रा ॥ ॥ र्क क म घा डाली कू रा क र्क ट क
 ता ग २ क र क र व वा व रू क म घा स व सि ड ता ग तू क क र ड य ॥ ॥ म डु त स
 म र्ग र व पा व ता ग पु व नु म घा व रू म ही व रू २ ल श्री म न वा ता क र क र ड य ति

२० मी गादि॥

तक मया महा पप्रतागावा गंधालम्भमभने एकतिवृद्धाकनकनोता
पत्रयत्रमया शकिलिकिलिलावाज्जुतवृद्धाकलिकनागावर्धसमपाग ॥
छादमरुजा छादवावदनाचउवृम्व दनाछादगतयता श्रुतयिकर्क ४०
यात्रावृहमात्रसा कालिनाहिरिप यापयिमर्दता ॥ ॐ ॥
रागागर्ज्जमहेत्रवि॥ गंधर्मागालिचलुकमात्रिशोषमर्पिगालकभवयता
अ ॥ रुद्रयितहैंहैंरुद्रकवेकत्राश्रानाविहायत्रोडमहावलिपजा १ ॥

२१ मी दिना॥

समयाने रुद्रयागा न्वलदका श्रवाहृविवाहृवचउमवतयता ॥ २ ॥ शितयक
त्रैकछगावलिआहा २ पृष्टिकवेकसमाकलवयत ॥ ३ ॥ ओडमहावविपृह
वनगायते २ मयमानसमरुद्र विवक्रहाय ॥ ४ ॥ ॐ ॥
रागा ॥ मयमहा ॥ गंधर्मा दिनादीदमाहुमिस्तद्वसवतम
त्रैमकुलसीलिलयता २ छादवाहुजचउवदतसूरुआलितवज्जवागहि
जालिगसाग अ ॥ हैंहैंदहदिहसूलनमात्रसयत्रसैवाधियात्र २ द्वादश

लीतानमदयसकावनावयिदातेथीचकुसुमचलयाया ॥ १ ॥ कलिमय
 लृगाजचर्मदिग्गुलाकर्हिउमयगुरुसाहिता २ मर्जपयितकपालवहासाया
 वायवमुवममिभयत्रा ॥ २ ॥ यश्चजितवयमकूटमालैकानय
 उमजाकारवसविरुषिता २ मालि कालिइयिमालिहवापयिवायच
 मतिवासनकुरुत ॥ ३ ॥ नयमिलमालालम्बथीसन्ध्यादिवचहृदितिक
 यसहिया २ उमजममायहुंरुपायवसागावन्तिपयमादिवजगीता ॥ ४ ॥

४९

वेदविनि

अकगानुधनौकर्मपस्यामिभिमिकुवटतगुंवकैस्वैवमाणवजादिवगुपासिपवि
 गतमिखवैगीर्षमालन्दमौली ॥ वागोष्टिष्टकल्लघनमिवतलियरुर्कनागच
 मोरुग्रीयशपायाथीसन्ध्यावसिखुव नविजयीजकिनीचकुवर्हिनी ॥
 ॥ वागागवउगि ॥ ॥ दैवितिसशवलविनावायिकथिस
 २ उयहवाठामसुलयाया ॥ ५ ॥ ॥ हृजकायहमवजगतनिवाभियाव ॥ ॥ अक
 ॥ सर्वताथागातागार्हसर्वताथागालय ॥ सर्वधर्मागतेनाम्यदशमसुलमरुमी ॥

व ॥ भूमि य २ तीर्वी ज न द ॥ २ सहज सुन्दरी नाया जित हूय प्रयि ॥
 क ॥ श्रमक ॥ सोत धर्मा गुप्ते रूत न चर्या विष्णु धर्मा ॥ स सत रुद्र काया गु
 ली स्वम सुलै मरु मं ॥ २ ॥ ॥ च उ या गि ती जल मल मला २
 वज्र वा रा हि ना लिंग का ला ॥ क ॥ श्रमक ॥ सर्व लङ्क न सी प र्क स
 वाल क न व र्जि ती स मी त रुद्र वा रा गुं धा य म सुलै ताल थि ॥ ३ ॥ उ थ रुद्र
 आ क व स क वा पि २ ऊ र्यै ऊ र्यै ना लिंग स नी ला व र्क वा य ॥ क ॥ श्रमक ॥ सर्व स

२५२ ॥

त्वमहा चिह्नं शुद्धं पुष्कलं नीर्मले ॥ समत रुद्र चिह्नं गुं ला स्वम सुलै मरु मं
 ग ४ ॥ रागा ॥ श्रमक ॥ स प र्क स र्व लङ्क न सी प र्क स नी ला व र्क वा य ॥
 कृत्वा सर्व विकल्पमाह्वय सेना कि
 रूत जित गुत श्रुता द्वय मा कृ प दे ॥ ती हूय का जितो ॥ य हूय कृ प विव
 ली पु र्म का य व ह ॥ ॥ रागा ॥ विरु स ॥ ॥ धन २ इ धन धन धन
 य २ धन य २ व कि मि य ॥ क ॥ स र्क २ व रुद्र क स म य २ क रुद्र या ग सु वि व य ॥

२४३५॥

तमासि २ जालिका लिखापित द्वा दश भूज कुवत भवरा २ उमद कवटि यव भु जि
 भुवद्वीग कपाल पाठव भवरा २ रातमासि २ चहुर्विंशति पीथ भवरा
 विम्ब व्यापित किलोयता २ द्वा हिमैव २ यं भवरा तमासु २ पय नृप भवरा ॥
 ४ रा ७७ ॥ ॥ रागा ॥ रा ॥ स ॥ ॥ पय मल तोलन च राव
 जराव क २ तच विण ह न रा ह क ॥ ॥ मा सत साति म हत विष्ट नव घ न
 माह त सा च प विष्ट ॥ ॥ राग ध य माह त ७७ ॥ २ तच प ७७ न्य समात द प ७७

78

२ वा मा द हि ने ॥

॥ रावत रावक मिश्रत गुरु निश्चयं गमहज विमुक्ति ॥ ॥ यत्न तु
यत्न तु वध निलोकं शक्त तु तं तु वध तम च्य ॥ ६० ॥ लोका मा हति नि
धदिन कत्य विवर्द्धित सिद्धि त र प्प
पा २ न उ व सित विरु विमुक्ति ॥ यत्र
स्व रावत जग जन्म ते ॥ ११ ॐ ॥ ॥ या गा ॥ सा त्र सि ॥ ॥ वा सा
दहि ते न इ यि घ वयी २ मा ऽप विना स यि म हा सु ख दु ल क्ष्ण या ॥ कु ॥ १३ ॥

२०३

यिप्रक्रियायासहजातद २ सपत्र विनासयितुप त्रिहव ॥ ॥ गयतमयत
विरुविनासयिषा २ कायवाकचिरुनककत्रिया ॥ ॥ १ केवावयिनाहल
यिषातगाधधमि ॥ ॥ पावयि ॥ ॥ गुदपायपुताद २ रुतयिवाग
वजसत्यसमाधि ॥ ॥ १०० ॥ ॥ राग ॥ सात्रव ॥ ॥ तिङ्गु
वज्जडावेडाहृदवराया २ श्रीहृत्तगसतयागिनीपयिस ॥ ॥ कु ॥ ॥ नानेदादिद
वाहृत्रिनातनादिदवा २ यत्रिनाचकिहृदवसतसाहृद ॥ ॥ ॥ पक्क

२०४

सिंहहिन्त्रनिजकलहृदव २ अवत्रिनातहापिवयिसकाक ॥ ॥ श्रीहृत्
आदियातकलयिचमुलि २ गीतकनहा किलवयिवाजक ॥ ॥ नालिका
लिङ्गयिपादधर्मा २ चउयागि ॥ ॥ नौसंगलगीह ॥ ॥ ययिस
यिदविनीजद्वयसीयाग २ कीउ ॥ ॥ किकमलकलिधवजरुहि ॥
॥ घसमत्रिधाविचोविधतानी २ लपनवउसमहृदववीना ॥ ॥ १०० ॥
॥ प्रागा ॥ ताडि ॥ ॥ वागाहिधस्तिहृदवसनाजादिनकरममुलमध्यास्ति

२० दिवस ॥

श्री ३ ॥ वक्रवर्मा दया चापयिता शुभ २ युष्मा मिवाचरोय
अथ श्री ॥ ४ ॥ ० ॥ ॥ रागा गवर्हवि ॥ ॥ फिदल
पमगुञ्जमसुलमहासुखं ॥ ॥ व२ दवी वज्रवीयासिनी तत्वं
शून्यवक्रवर्मा ॥ क ॥ पिव
गोसाङ्गमार्गसुख उवाचसार्थ ॥ १ ॥ वज्रवा राहिन्नालिं गसगग
स २ शिखुवनसुवनयदवी ॥ २ ॥ पञ्चापञ्चकगुञ्जसिधिका नन

४१

२० दिवस ॥
रूप वा. वज्रवा निवे

रूपकीया शततपिकलदहन्नाचार्य च विना ॥ ३ ॥ ॥ ॥
रागा ॥ पंचम ॥ ॥ अष्टनोत्रिंशद्विपासका २ अष्टयातिनी वचन ॥
क ॥ सिप्रसिर्गिलक ॥ ॥ वरुणा २ दवी पुष्पादतमा ॥
मार्ग ॥ १ ॥ तत्र सत्त्वमथीव ॥ ॥ पासका २ गुदवाचननागां
॥ २ ॥ कलर्वसमाहुतत्वरुलदं २ कवडि कचिरुतागरुलदं ॥ ३
॥ तत्त्वसिप्रसिर्गिलकपुष्पादं २ अत्तमवज्रवीयासिति सवर्ष ॥ ४

२५५॥

० ॥ गंगातर्पणं च मया गच्छि मन्त्रं चिह्नं जगत्प्रतिष्ठापितं च कु १ षष्ठं गि लोकांतावसी ॥
 कु ॥ गंगे वज्रदं वीचकी क सुलकस्थि लोचकमस्तु ल तो प २ म्भ ३ तवारी २ माव न ३
 सिवकं ॥ थ ४ विह ५ य ६ म्भ ७ कला ८ जि ९ सि १० व ११ त १२ भ १३ वी १४ व १५ ज १६ या १७ गि १८ ती १९ ॥ १
 ॥ दहित कलनिवास कपाला २ दिगन्धवमकुटसूकभी ॥ २ ॥
 त्रिदलकमलापविभव ३ उपविषादमकं नस्थिता ४ ॥ पतमासिथी
 येनावतीथ ५ त्रि सितयनक ६ त्रि श्वदी ७ ए ८ ॥ ४ ॥ हतयि ९ प १० सह ११ ज्ञा १२ त १३ न १४ द

२ तिदयसो नरु ॥

१ वज्रवात्राश्चर्यमपायात् ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ॥ रागा ॥ नाट्यवावरी
दास्य ॥ ॥ जिहलसत्रादेह दिनकलमसुलराजित जिह्ववतजननी
१ वक कने वरहितितेय रसमा ॥ १ ॥ ॐ ॥ ॥ रागा ॥ नाट्यवावरी
दवीक वगिकया ववत्ररुषियन ॥ १ ॥ ॐ ॥ ॥ रागा ॥ नाट्यवावरी
द्वयिगा ववाजयी नाचयि सहजल्य वपिशी ॥ १ ॥ ॐ ॥ ॥ रागा ॥ नाट्यवावरी
सुत काष्टससा ॥ १ ॥ ॐ ॥ ॥ रागा ॥ नाट्यवावरी

२ कमलक्षिपदना॥

२ ॥ रुवपुलयातलतजवयियादाहमस्तकनापा २ लावालावविवर्जितमनपम
ननरुजागगतस्वपिनी ॥ ३ ॥ पत्रभवजपदमित्रगतवयिमावक्तिहाकृति
मा २ ननरुजसिद्धिमाऊपदापुसमा मिश्रीवऊयगिति ॥ ४ ॥ ॐ ॥ ४२
॥ रागागासा ॥ ॥ कमलक्षिपद
गिनी २ वामद्वीगकपालवत्रादहितकलतिअवसी ॥ ५ ॥ तमाति २ श्रीवऊया
गिनीपिबुवनऊतनी २ पठयागिनीपविष्टमनाहमसुलसहजानंदस्वपिनी

४२

२ सुभाकरना॥

॥ १ ॥ पत्रमडाहमपचरुतमयजिकालस्वरावजिलाचनी २ कत्रसावस
खरावकशठकवाधिविरुखद्वीगयात्रि ॥ २ ॥ सैवर्हिपवमार्थद्वितीयवकु
इवनिहृदनीकवतिवारी २ वधिरथ वतिमसुमालाभावासनावायव्या
पिततेरासमर्प ॥ ३ ॥ ननेगति गुवपादसराऊपसादोश्रीवऊद
वीविमुद्धिगीता २ हुं हववसनीकासमावदासहासवससावपारीगमिता ॥
४ ॥ ॐ ॥ ॥ रागागाविहासा ॥ ॥ हुं न्यकवसकवतिसपाजमहि

कं च इव चाङ्गदिगन्त्रा २ प्रथया गितो व विन नालिकालि मकूत कभी कात्र
 दहसि प्रियावता ॥ कुं गानमाभिदवी श्रीवङ्ग या गितो सव नमहा रुयता वसी २
 नष्ट महा रुयति नका कुत्र रुगवति उर्द्धपि न्तु उर्गति नी ववा ॥ १
 ॥ प्रिभुवन साकं कवदि रुगवति सिं वर मन्त्र अत इव वि २ वङ्ग क
 समनु मङ्ग वक सद्दिका सिन विभु इति विभु वका ॥ २ ॥ रु कूट गि विद्वय
 हाव मङ्गल माप्य नमिय मरु वङ्ग वा गहि २ धर्म सहा गति र्मान महा सख नत रु

३०

२ प्रिभुवन साकं कवदि रुगवति

प्रज्ञान वाव दहा ॥ ३ ॥ स सर्वतथागत वङ्ग विहात्री च कुत्र वु म्प्र विहात्रा दिव्य
 ककत्री २ यं नन् मादि क स रुल कत्री विनय पत्र माद वङ्ग गीता ॥ ४ ॥
 ॥ लं ॥ ॥ रागा ॥ जो वलि दासा ॥ ॥ प्रिदल सखा
 हति सि ह्वं मङ्गल २ स वङ्ग दिता ज्यता न्द व विवसा ॥ कुं गानमा
 मिश्री सहज स्रपिनी २ रुह २ वङ्ग विरासिनी प्रिभुवन पङ्क्ति कवी वं ध श्रीग
 १ रावैका वङ्ग रुप इलित पवन सै प्रलित २ न्द्र सखा पमनी ल उर्द्ध गता ॥

२॥ दहयिजितविश्वविजयकरुदिता २॥ वयिपीयषवागमात्मपिता ॥ ३ ॥

१ ॥ दहयिजितविश्वविजयकरुदिता २॥ वयिपीयषवागमात्मपिता ॥ ३ ॥
मागवा वज्रहसिवाकृतीमात्रल २॥ दहिमात्महिमिहि वीविपदाता ॥ ४ ॥ ॐ ॥
॥ गंगागाजावनि ॥ वासहजसत्रान् हह्वेवराया २॥ पुकलिकिन्नसदह
॥ ३ ॥ गतमामिश्रोदकुयागिनी २॥ हह्वेवराया पुनमामिघृणय ॥ १
॥ विरुवनव्यापिनिवजयागिनी २॥ हितकरकिवरीनि ॥ २ ॥ कदाज्ञात्रमताह
॥ गतसुता २॥ वामकरोरुकरवहा ॥ ३ ॥ हतयिसूत्रावजवाह्विदाता २॥ सगु

५१

२॥ दहयिजितविश्वविजयकरुदिता २॥ वयिपीयषवागमात्मपिता ॥ ३ ॥

२॥ वनननावा ॥ ४ ॥ ॐ ॥ ॥ गंगा ॥ विलस ॥ ॥ विरुजवक
मज्जवकवर्त्तु २॥ गतमकटकवलिनिवाचता ॥ ५ ॥ नमोदेवीवहुताकिति वि
मज्जनति २॥ विरुवनव्यापितहित हानदायनी ॥ १ ॥ दहितकरव
जविशसिह दग्धेति २॥ वामकरोरुकर बहुमात्रसेपीवयि ॥ २ ॥ तत्रसि
मासुतमागडादियानगमन २॥ तत्रनो परवत्रसगतपुवक्षिता ॥ ३ ॥ श्रीविश्व
धरोदेवीसूत्रननमहिता २॥ सकलमहिमिहि दहिममाता ॥ ४ ॥ ॐ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१ गंगाकनदि ॥ वायकवर्षदहद्विभुजकाम्या २ नगमकूटकभीजिवाच
नीरा ३ ॥ समादवीविशाधरीदिदमालयव्यापिता २ मडिसिद्धिदायनीजगतजत
नी ॥ १ ॥ दहितदायनीवामपादवा ॥ श्रीविचित्रमालाकवयाधारी
॥ २ ॥ गानमसुलमाभपुङ्गवपि ॥ श्रीतातावतारैरुपपुत्रपुत्र
ति ॥ ३ ॥ गुरुनयिवलवजगीता ॥ श्रीवज्रदवीचवसमाद्वयवस ॥ ४ ॥
॥ १ ॥ गंगाविहास ॥ गदिव्यपीसुपीचक्रकागसूक्तिदवी २

५२

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विभुजकाम्या २ नगमकूटकभीजिवाच ३ ॥ गानमसुलमाभपुङ्गवपि ४ ॥
श्रीविचित्रमालाकवयाधारी ५ ॥ श्रीतातावतारैरुपपुत्रपुत्र ६ ॥
श्रीवज्रदवीचवसमाद्वयवस ७ ॥ श्रीगंगाविहास ८ ॥ गदिव्यपीसुपीचक्रकागसूक्तिदवी ९ ॥
॥ १ ॥ गंगाविहास ॥ गदिव्यपीसुपीचक्रकागसूक्तिदवी २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

२ छिछवन दं नि॥

नमामि श्रीविद्याधरोदयो २ नमो गच्छति द्विवत्प्रपुष्पादा ॥ १ ॥ दहिन विंश्रवाम
सुकी २ विविध पृष्ठा माल हस्तो डलो ॥ २ ॥ सकृदकंशाये दिगभक्तानि २ गुम्भ
दवो डगगडनतो ॥ ३ ॥ श्रीवड्ड
ता २ गावन्ति सूत्रवड्डमङ्गलगी
रागाताता ॥ ॥ विष्णुवतदवोस्वर्गमएव दवो २ द्विहुडुनकमश्चत्रकवर्क
प्रितिवोचति दवो ॥ ४ ॥ नमामि दवो चहुदा किनोतक दवो २ श्वघाङ्ग उम

53

२५ द्या मि नि ॥

प्रणीवतप्रमिलमात्रा ॥ १ ॥ दहिनरुजवजवित्राभिनीधवी २ वामरुज
 कशोककचरुमात्रपिबयो ॥ २ ॥ अहिमिद्धिदवीरुवर्गगिताभर्त २
 रुवरुयह्वसंभफ्रुयह्वस ॥ ३ ॥ दवीनकाभविशाव
 दवीरुतयिप्रवजानवतवज ॥ ४ ॥ सत्वदवीचवसं ॥ ४ ॥
 ॐ ॥ ॥ योग ॥ तान ॥ ॥ उदयागिविह्वप्रगितीकामा २ कुलिस
 कशोककचवित्तदवी ॥ ५ ॥ गुरुमदवीमादितविशावविदवी ॥ ५ ॥

॥ सर्वदेवीयि रुद्रवसुशुक्र पञ्चकृष्ण २ रुद्र देवीयक सर्वदेवनवन्दि
 तग रुद्र देवीयक विद्याय विद्वेदी ॥ २ ॥ मनुष्याय स हि रुद्रवतव
 २ रुद्र देवीय विद्याय विद्वेदीय कि ॥ ती देवीय रुद्र देवीय दिवाकय वि
 याय विद्वेदीय ॥ ३ ॥ अंकाय वज्र ॥ सैकनरुलिया २ रुद्र देवीय वि
 गसि विद्याय विद्वेदीय रुद्र देवीय मादित विद्याय विद्वेदीय ॥ ४ ॥ ॥ ॥
 ह्यागातय ॥ ॥ उदयगिरिमत गति सैका साकूलिगक गक कय विद्वेदीय ॥

गान्नालालिक चक्र उदयगिरि मत्रपुदक्षि सदिनयाति २ रुद्र देवीय वाहि नप
 यिपयितयवी ॥ रुद्र देवीय मादित विद्याय विद्वेदीय ॥ २ ॥ रुद्र देवीय दयगनी
 सधिमिद्वतवृष्टि उदका कनस ॥ यका २ सैहाय कर्ल मृष्टि सकर्ल ॥
 रुद्र देवीय रुद्र देवीय विद्याय विद्वेदीय ॥ ३ ॥ स्वर्गमाध्यापानात्र हि रुद्र
 तव रुद्र देवीय सर्वदेवनवन्दि २ रुद्र देवीय उदयगिरि सर्वदेवनवन्दि ॥ रुद्र देवी
 ह्यागातय ॥ ४ ॥ ॥ लल श्रीपयश्चर्म रुद्र देवीय विद्याय विद्वेदीय ॥

१ ग सर्वकवर्हिभगति. वासमूर्किवायो २ मान्यायमहमान्यायमाय
ष्यसाहिना २ ॥ हानसलुलमाये. आदियांनगमता २ नानावत्तपुमाय
सगर्भपुर्वसिना ३ ॥ मरुति मिसमवजुविद्याधरीमाता २ म
गवेगसगुनहोनसिद्धिममाता ४ ॥ ६० ॥ ॥ त्रागातिर्व
दवामकवि ॥ ॥ चिर्यैविसमयमनाहं गतित्वहावकुसुप्रयवउमकिया २
आदिमकसमसंकाभललिलाथतहनमयनकुउमकिया ॥ ५२ ॥ वासक

51/3

शरकदहितकवत्तजनगमकूटकक्षिया २ वृक्षतीकलयविश्रुतिव्याहिति
विद्यावप्रिक्रोया ॥ १ ॥ सूर्यमसुलमाप्यडिद्याततिहितीनसंहावपिति
या २ कवृक्षसंहावपिवयिवतिथि थतहत्तमयकुडतमापिया २
॥ नृथिवथिवनहाथिवदाइत्रि मृववकालिकालि २ सहजान
न्दसहासुइवकविबृहजकिनिनुकापिया ३ ॥ कवृक्षसंहावपिबुवन
रुलिया, हावन्नहावनहापिया २ नृदिनकमाप्यनिवृपमजातियसमा

मिस्रवचरुतयिशा ॥ ४ ॥ ८०७ ॥ ॥ राग ॥ कनदिग ॥ ॥ कृम
 पुष्पवचरोतिदलसीजागृहंकायसीरुवचकवर्षदहा ॥ ५ ॥ त
 मासिश्चोशेरासादवीश्चिफुव नवापिहजगगडझावीया ॥ ६ ॥
 ॥ दहिनकलकिवासीवामस्वर्षी गकयाशश्चिकिफुलकस्मिगीव
 ॥ ७ ॥ ॥ दहिनरुववदववामवासुकिश्चर्वदवदवीगनपुजिना
 ॥ ८ ॥ ॥ वाहिरवचरादविसम्बन्धनाताविश्रुतातावागमनिश्र ॥ ९ ॥ ॥ रुतयिम

५१

[illegible]

[illegible]

५६

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

[illegible]

नीम सुलव क रुत पिपा २ सुल को स प उ क य पिपा ॥ २ ॥ व जि धा नी व
ता रा च मु नी २ ति पि नी वा पि नी दे व क उ ल कि नी ॥ ३ ॥ डा कि नी द्वि पि नी च
उ सि के वा ऊ नी २ स य य स म य रु य वी ध न मा च पि ॥ ४ ॥ ॐ ॥
रा गा ॥ व स न ॥ स व स न ॥ ॥ म वः वि प लि प रा ड य ति रु रा रा २ स
क न द व ग न व न्दि त पा द ॥ ५ ॥ मे लि ना दि व रु शी म ड क मा रा २ त्वे न हि
व न्दि त प म न रु ह्ये रा ॥ ६ ॥ क क म व चि रा सू त्र चि व वि षा २ शू त्या नि ग मी

32

शक्यस्वविहाग ॥ २ ॥ विश्वयविषमाकलषार्थगतनस २ विश्वविद्याणि
 तमिवगुप्तस्वयंरु ॥ ३ ॥ मरुगुप्तपनमादिविदुग्नागव्य २ गावन्किनव
 गीत.पुनवकुलि ॥ ४ ॥ ॐ ॥ ॥ राग ॥ हेत्रवि ॥
 रतमासी शक्तिनकाहुकर्त्रेदकव
 नपचरकाहुस्वप्नावहुधर्मनाययस्वरा ॥ ५ ॥ गताहं ह २ उगागसंसाय
 उवावयामता हन.तमाशुश्येचजितस्वरा ॥ ६ ॥ गताहं ह २ नमासि २

८७ कवचम् ॥

माकि पत्रम् अस्मि सिद्धि वन दायति २ इति ह न त सर्व पाप कुर्यं कत्र स
न पस्व न ह मा कुर्यं दे ॥ २ ॥ त ता हं हं २ त मा मि २ धर्म वा गु वा गो श्व वर पा
द स इ उ म त्र प रि म सि ता २ धा उ
प रि म सि ता ॥ ३ ॥ त ता हं हं
अ गि त रि ति वा सि ता २ स वा हि मा हि त इ २ ख वि ता भ न पु न मा मि डि त व
कु श व रा ॥ ४ ॥ ८६०३ ॥ ॥ रा ग ॥ म त्रा ॥ ॥ न क व द न त म

३३

कठ नालं कृता २ च कुरु ज श्व कृ प क स त्र व न क्षी ॥ ५ ॥ त मा मि मे श
श्री प त्र न र्थ म रा २ स य त्र न्ना सा प रि प रि त उ वा रा ॥ ६ ॥ द हि त श्री ग
स प ति वा म श्री म हा का रा २ स ग
॥ ७ ॥ मृ दि सै हा व रा या वि स
वा वि इ रि त ह व स ॥ ८ ॥ व ज ध न पु सा दि य दा त रु यि या २ गु व र
व स मा त्र सि धि व न पु सा द ॥ ९ ॥ ८६०४ ॥ ॥ ८६०५ ॥

२४८॥

रामग ॥ ताडि ॥ ॥ यश्च कषात्राश्च द्विष्य सो लिप्ये चक्षुतये च मूजा
रुद्रश्च १ नत्र सिलमालागीध ॥ आहा व्याघुचर्म कटिरुषितत्रयता ॥
ॐ गहं हं हं कात्र सजातवदता ॥ खर्वलम्बादत्र नोलसमदहका
वो विपग्रीमहाकारा २ पंचामृत ॥ वसदर्यरुतयिषा हायनवुअ
कषात्रवरा ॥ १ ॥ त्रकपुठालागितितयना धात्ररुयंक वलोषमवदता
२ उर्ध्वपुठालिपिगालकं ॥ उन्नमरुहं ॥ कत्रनामय ॥ २ ॥ कत्रति

॥ कवचं किमस्य ॥

कपाशाक्षत्रिसख दीगाताग नारुवसा. कसुत्रहात्रा २ नागसिखरु नोपत्रना
गमनरु नागनारुवससखाता ॥ ३ ॥ कितववमोत्रीवत्रिसमतावडभास
नस्यवडकवीना २ पतावकातालु वहावासाधवककलिगा. ननरुव
मवसा ॥ ४ ॥ ॥ ६००३३ ॥ ॥ रागा ॥ गीवरेवविवा रावक
वर्क. एकमखविमुजवकवर्कवनिनर् २ दहीनमुजगाठाहसं महावीव
ना ॥ ५ ॥ नमामिश्रीहिमस्यनपवमध्व २ वासमुजमरुयमेडापुहाली

॥ १ ॥ जगत्संसारलालरूपसादसिद्धिर्लब्ध ॥ जगत्संसारोद्धि
 सिद्धिरुल्लसहिभ ॥ २ ॥ अर्पयन्ता सुवसहिर्गर्भेति सुन्दरी देवी ॥ नृप
 र्पयन्तु लालरूपसदं मर्मगता ॥ ३ ॥ सतगुरुचरणपुसादसिद्धि
 र्जितमाप्ति ॥ ४ ॥ अथमा
 प्रगिरिच्छिन्नवज्रपुरुवासा र्या ॥ नृपपुरुषविवर्तिता सीता ॥
 ५ ॥ ॐ ॥ ॥ रागा ॥ तात ॥ ॥ कनकवर्णकमलद्विज ॥ शिवि

[illegible]

२६ का प्रतीक ज्ञान वने॥

रमागा॥ जावनि॥ ॥ है का प्रतीक ज्ञान मुद्रा दहा २ द्विपुत्र का स्थिति न कुरा
कु वां ता है है ता है है २ ता ता है है है है ॥ १ वाचकी कुलुल कलि स्व
हा २ ला च क व्यय ल व प्र स ॥ २ ॥ भ इ व ल तो प ल पा य २ घा
घन रु स व्या घु च म ॥ ३ ॥ स व्या क व व क वा म घ २ रु व व का
लो ला लि च प द ॥ ४ ॥ अं अत्र ॥ वा अ य श्री द्वि रु अ म् व र जी रु व न व्या
पि ता २ म द्वि सि द्वि म हा म् डा सि द्वि ॥ ५ ॥ ॥ ८६० ॥

३३

२६ सिद्धि म सा न॥

रमागा॥ हे त्र वि॥ ॥ सिहा दि स्म सा न वा वि रु क्त न न ता ग क न्द ला वा २
च द्रा ग्म सा न सी ल स द्वा वा स कि ता ग ग जी त म घा ॥ ३ ॥ वा न डी ता
गा ज्ञा ता ग प रि सी वा सि न रु सि म सि कि त र्से २ ग हा ल स्म सा न
म स्व क द्वा ता क क ना ग म् घु ति न ज ल द ॥ १ ॥ वा की क रि धा रा व
रु त म घा का ली कू ला ल क की ट क ना ग २ क र्वा ड रु व वा व रु त म घा म हा
प म ना ग म् च क द्वा ॥ २ ॥ वा न्द रु रु हा सा र्से व पा ल ना ग म् प च द्वा म घा

२०॥ दिवस २०॥

॥ रागा ॥ घना श्री ॥ ॥ आदिवा ॥ र्स हव वि धी क्ति वि वि क्ति सै जा त २ ॥ अत्र न द
सम द हा ज ता म क द च द्रु ज्ञा ॥ ३ ॥ न मा सि श्री ॥ ले का वि शी पो प. न
व प च इ न म श ॥ श्री १ ॥ क न द न
क ल ॥ १ ॥ द हि न न सि च
वि २ ॥ वा म प रू क ध र्म रा ज. पु का सि क ध र्म कं व ॥ २ ॥ द हि न वा म क ल
वा प प ह रि त. च द्रु मा ला २ ॥ क सि ति. उ प क षि त्या दि. ॥ अ हि त न्म श्वा व च क

३८

२०॥ रागा ॥

॥ ३ ॥ जि न स त च व र्ण. न म्ब ज स त र्ण. गा व कि त र त्र व ज २ ॥ अ स म त कि. म श
क मा रा. लं जं व म घ ना स त ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ रा ग ॥ द ग ॥ ॥ ॥ मा या
जाल वि म्ब. स दृ षा म री रा २ ॥ मा ह मा
॥ न र्ण सा व अ सा रा २ ॥ रा गं ष प मा ह
मि र व न यं न. दृ ष क व चि य २ ॥ अ म नो वि क इ ष त्र प स्थ इ ॥ २ ॥ स ह ज सै ला
व न य उ द ना ग क व रि या २ ॥ स प त म वा स व ल ॥ ३ ॥ न डी थ डी उ द य व ल

पायपसादाश्च वक्तुं तिष्ठति पापकृत्तु कृता विवा ॥ ४ ॥ ८७० ॥ ॥
 २ रागकोमा ॥ ॥ पूर्वदिगस्त्रिणा. गोविंदवीरकावसे जाता. नीलवर्ष्
 ता २ दक्षिणदिगस्त्रिणा. गोविंदवीरकावसे जाता. नीलवर्ष्
 कु. बाहवजनेनासादवीनसुया. गोविंददिगस्त्रिणा. पुष्पमासि नि
 सी ॥ १ ॥ पश्चिमदिगस्त्रिणा. गोविंदवीरकावसे जाता. पीतवर्ष् २३
 हलदिगस्त्रिणा. घनवीरकावसे जाता. वक्रवर्ष् २ ॥ अग्निदिग

३७

स्त्रिणा. सवलिंदवी. सैकावसे जाता. स्रववर्ष् २ तेमी. दिगस्त्रिणा. वज
 लींदवी. सैकावसे जाता. कृष्णवर्ष् ॥ ३ ॥ वायव्यदिगस्त्रिणा. अग्निनींद
 वी. उंकालसै जाता. कर्णवर्ष् ॥ २ ॥ कर्मातदिगस्त्रिणा. पुष्प
 सींदवी. पीकालसै जाता. स्यामव
 स. वतीनस्त्रिणा. वज्रमूलम. अस्वयसै जाता २ गा. अतिकुलिगा. चोर्थादि
 ऊर्व. आहव. दानपतीनी. स्रवलेके दाता ॥ ५ ॥ ८७० ॥ ॥

२६ वीं ज्ञ से ज्ञा ॥

रमाग कामा उ वा ॥ १ ॥ वीं ज्ञ से ज्ञा क व व व र्ण हा २ व ड व व ना म म हा का र्ण
जा वा ३ ॥ त मा मि श्री वो य म् व रा १ ज्ञ म म वि ना मि ता वा १ ॥ १ ॥ व क व र्ण
हा ॥ २ ॥ वि ज्ञ से ज्ञा क २ ज्ञा ला मा वि ता म म हा का र्ण व रा ॥ २ ॥
न नि व व व र ग म हा का व रा या २ से वि ज्ञ से र्ण म हा क पु व र्ण
हा वा ३ ॥ व का र्ण से ज्ञा क म हा व ले ना मा १ न नि डी म न व र्ण म
हा का व वि य ॥ ४ ॥ म न य म डि क ता म म हा का व रा ज्ञ १ की वी ज्ञ से र्ण म र्ण

१७

२७ वीं ज्ञ से ज्ञा ॥

त व र्ण र्ण ॥ १ ॥ ज्ञ का र्ण से ज्ञा क न नि नी ल व र्ण र्ण १ से म र्ण क ता म म हा का
व रा ज्ञा ॥ २ ॥ य मी क ता मा म हा का व रा या २ म वी ज्ञ से ज्ञा क न नि नी ल व
र्ण र्ण ॥ ३ ॥ से वी ज्ञ से र्ण व का क न य व र्ण १ क लि क लि ता म
म हा का र्ण व रा ॥ ४ ॥ म हा कं लि क लि ज्ञ वी ज्ञ से ज्ञा क १ य रा स
व र्ण र्ण न नि का र्ण रा ज्ञा ॥ ५ ॥ ॥ म का ल से ज्ञा क पि रि व न र्ण
१ व वा १ व रा य नी पी ता वा स की ता म च हा गु रि व मा ध ति क ज्ञ व रा ॥ ६ ॥

गङ्गासपति कुसारा. माहाकाल ऊपपाल जा गिस्ति गसा २ म द मान्नाप च
 विष्णुपति जिग. रुकु पाद लुपी वरु ॥ १ ॥ य. वर्ग जा ग नदि त ल व
 वस. पिष्णपाद पं पु च रु रु व वा
 कलससा सपाद पं. पति ग ज ल
 व व व स. मृग क पाद पं. व व व
 कौट क नाग काला कला न न्दि त ज ल दा ॥ २ ॥ ग व र्ग जा ग. वि ह
 म त. नृ ग क पाद दा क पिल रु व वा २ वा ना हि व का. महा प म रु डी ग. क व र्ग रु

११

व वा व रु क ज ल दा ॥ ४ ॥ क व र्ग जा ग न क रु औ ग. क र्ग ज वा रु कौ र्व
 रु ल वा २ क मात्री व का. महा प मा म रु ड हा स. पु च रु ज ल दा ॥ ५ ॥ व
 र्ग जा ग. मारु का रु दि ति ऊ प क टि
 विष्णु मा न त क ना ग म ल श्री रु ग
 वर्ग जा ग. मृ न्य ग रु वा स रु रु न
 व का. क लिक ना ग. धा र्ग व का वा व रु क ज ल दा ॥ ६ ॥ व र्ग जा ग. मृ न
 रु व रु मा न. व रु व पाद पं. की र्व म रु व वा २ महा ल श्री रु व मा. र्ग व पा ल ना

पुत्रस्य नि॥

ता किलिकिलिवात्रवात्रावर्षसञ्जलदाग ८ ॥ कामाउ ॥ गुरुयवका
लिपादरुत्रासद्यादभनयना नालि वचवने श्वेदवदनैव विकवअ
यते नमातिहृत्तारुवरुयह लसी ॥ ७ ॥ ७०५ ॥
॥ राग ॥ हरेवी ॥ ग
कतकवर्षः अङ्गमपुष्पालि
तचन्द्रवप्रि मूलपाकेवाभिो कु ॥ हे हे मष्टमभान्यतिववाल स
हिता नष्ट है प्रवराक्षपकिस्हि ता २ मष्टमदि नमेलनमा अण्डातोत्स

72

मर्वक.पापरुयहलन॥ १ ॥ पश्चिमं न्यायनिदवी हंसवाहन.कौकम
वर्ष्मवर्ष्महस्तो २ दक्षिणवा नाहिदव.घतधोत्रलूपै.मृकू सभाहिता.मयी
खासने॥ २ ॥ वाक्सात्यवन्दि
त्रिउमदसहीता २ ल.एदिस्पक
जात्रवर्ष्मसकिभावि॥ ३
न्य.गाऊचकुसहितामयीत्रभावि २ वाक्सात्यवन्दि.कौकात्रवर्ष्म.हि
हवाहनवर्ष्मसात्रीगा ४ ॥ वाक्सात्यवन्दि.कौकात्रवर्ष्म.हि

मिदवी २ पुनमासि द वी श्री न्ना विषा यत्त गुति सकृ ति ज स्य सिद्धि कत्र
वज्र ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ॥ राग ललित ॥ वाजय विद्या क के हं काल
संजात २ ग ऊ म स्वरा न पति ना लि मि ता ॥ ६ ॥ त मा मि
नक म स्व को ध रा जा या २ ख व क ति र व र्धु पि गा व क षा ॥ १
॥ स्व ट रु डा द हि त का र ति क ड उ सं म र २ वा म क पा य पा स स्व त्वा
ग धा रि ॥ २ ॥ म नु सा रा व्या घु च त्त ल वा ध रा या २ द स दि ग मा ल वि धे स
नि द वि ॥ ३ ॥ म हि सि द्धि व ल वि प्र वि ना स नि २ ग डी कि हं काल सं व ज गि तो क्षा ॥ ४ ॥ ॐ

१५५१ ॥ नमो गमाशा

रपञ्चानवविहसनादह

पञ्चमः १

प्रकृतं लम्बकदहः पृ २

पृष्ठ ३ अनील : पृ ३

पञ्चमः सर्गः ४

पञ्च नमहं ए अ

पञ्च ॥ निर्मितादि

पञ्च स्वर्गो मिनि

पञ्च ५ उँ आरुं रुद्र

पत्र ४ त्रिकु पृ ७

पुनः हि युवनक्षयिणः ॥

पञ्चमं सा अरुण पृ ८

पञ्चमं गृहजं पृथ

पृष्ठ १५ हं विक्रम संव १०

पृ १५ सर्वाङ्कात् पृ ११

पञ्जीग

पत्र १२ हँहँदहः प १२
पत्र १३ दिनाः प १३
पत्र १४ अजिनः प १४
पत्र १५ विजय प १५
पत्र १६ अश्वयनिन प १६
पत्र १७ अश्वयनिन प १७

पत्र १८ वाविबलः प १८
पत्र १९ उर्वारः प १९
पत्र २० विविहँविः प २०
पत्र २१ निर्मानादिः प २१
पत्र २२ वटयागिनीः प २२
पत्र २३ उँआः हँहँदहः प २३

१

पञ्जीग

पत्र २४ अश्वयनिनः प २४
पत्र २५ अश्वयनिनः प २५
पत्र २६ अश्वयनिनः प २६
पत्र २७ अश्वयनिनः प २७
पत्र २८ अश्वयनिनः प २८
पत्र २९ अश्वयनिनः प २९

पत्र ३० अश्वयनिनः प ३०
पत्र ३१ अश्वयनिनः प ३१
पत्र ३२ अश्वयनिनः प ३२
पत्र ३३ अश्वयनिनः प ३३
पत्र ३४ अश्वयनिनः प ३४
पत्र ३५ अश्वयनिनः प ३५

पगीन

पत्र २३ सकवजः पृ ३७

पत्र २४ अक्षकण्ठपात्रः ३७

पत्र २५ जिनवचन ३८

पत्र २६ अन्यानिर्वजनः ३९

पत्र २७ अक्षयनिर्वजनः ४०

पत्र २८ दिगुज्जुकमूषिः ४१

पत्र २९ कडोत्रः पृ ४२

पत्र ३० श्रीमहेश्वरः पृ ४३

पत्र ३१ उक्तवदनः पृ ४४

पत्र ३२ विष्णुकेसरे ४५

पत्र ३३ श्रीहवजभेनात्मा ४६

पत्र ३४ विष्णुकेसरे ४७

पत्र ३५ विष्णुकेसरे

पगीन

पत्र ३६ विष्णुकेसरे ४८

पत्र ३७ अक्षयनिर्वजनः ४९

पत्र ३८ दिगुज्जुकमूषिः ५०

पत्र ३९ उदयागिरिः ५१

पत्र ४० अक्षयनिर्वजनः

पत्र ४१ विष्णुकेसरे

पत्र ४२ अक्षयनिर्वजनः

पत्र ४३ सर्ववदनः

पत्र ४४ अक्षयनिर्वजनः

पत्र ४५ अक्षयनिर्वजनः

पत्र ४६ अक्षयनिर्वजनः

पत्र ४७ अक्षयनिर्वजनः

पञ्च ॥ ४१ ॥ पुंभादिता

पञ्च ॥ ४२ ॥ ईविनि

पञ्च ॥ ४३ ॥ चरचर

पञ्च ॥ ४४ ॥ नमामि शून्यक

पञ्च ॥ ४५ ॥ परमवर्गात्र

पञ्च ॥ ४६ ॥ वामादहिन

पञ्च ॥ ४७ ॥ निर्जैरुडा

पञ्च ॥ ४८ ॥ वामाहिवस्ति

पञ्च ॥ ४९ ॥ नमामि श्रीवर्क्यामि

पञ्च ॥ ५० ॥ हिद्वरपत्र

पञ्च ॥ ५१ ॥ नृष्टनात्रि

पञ्च ॥ ५२ ॥ द्विष्टव

पञ्च ॥ ५३ ॥ हिद्वरसनात्र

पञ्च ॥ ५४ ॥ कमरहियन

पञ्च ॥ ५५ ॥ सैन्यकनन

पञ्च ॥ ५६ ॥ हिद्वरसनात्र

पञ्च ॥ ५७ ॥ सहजसनात्र

पञ्च ॥ ५८ ॥ द्विरुजविश्वानि

पञ्च ॥ ५९ ॥ वकवर्क्यहि रूज

पञ्च ॥ ६० ॥ दिव्यरूपि

पञ्च ॥ ६१ ॥ दिनमतिमसुत्र

पञ्च ॥ ६२ ॥ हि हवनदवि

पञ्च ॥ ६३ ॥ उदयागि त्रि

पञ्च ॥ ६४ ॥ उदयागि त्रि त्रि

पङ् ॥ ३१ ॥ सूर्यमस्तु
पङ् ॥ ३२ ॥ लोहितवर्म्
पङ् ॥ ३३ ॥ चिरयवि
पङ् ॥ ३४ ॥ कृमस्तुपृष्ठा
पङ् ॥ ३५ ॥ नैविजसूरुव
पङ् ॥ ३६ ॥ कटिपुत्र

पङ् ॥ ३७ ॥ पृष्ठलि तहं कानसेज
पङ् ॥ ३८ ॥ नृत्तसिक्
पङ् ॥ ३९ ॥ हंविजसूरुव
पङ् ॥ ४० ॥ उर्ध्वक
पङ् ॥ ४१ ॥ वज्रिधानि
पङ् ॥ ४२ ॥ जितववजननि

पङ् ॥ ४३ ॥ निर्मत्रे गयन
पङ् ॥ ४४ ॥ मधु निप
पङ् ॥ ४५ ॥ नमामि शक्तिनकारु
पङ् ॥ ४६ ॥ जकवदन
पङ् ॥ ४७ ॥ पचरुपान
पङ् ॥ ४८ ॥ वकवर्म्हिनमस्तु

पङ् ॥ ४९ ॥ कनकवर्म्
पङ् ॥ ५० ॥ हं कानसेजान् जावनि
पङ् ॥ ५१ ॥ सिंहदिस्मसान
पङ् ॥ ५२ ॥ हवसिन्
पङ् ॥ ५३ ॥ हं कानसेजान् कनवी
पङ् ॥ ५४ ॥ नृदिवर्म्

पञ्च ॥ ३२ ॥ मायां ज्ञान ॥

पञ्च ॥ ३२ ॥ पूर्वदिगल्लिख

पञ्च ॥ १० ॥ हूं वी ज संज्ञात

पञ्च ॥ ११ ॥ जेकोर संज्ञात

पञ्च ॥ १२ ॥ पूर्ववृक्षपति

पञ्च ॥ १३ ॥ जय विष्णुकक

२ विष्णोर्गं न तवाहावया सर्वानन्दरुह ॥

२ अजुषा क्षितिर्वनोका लविज धैतल्लिख ॥

पञ्च ॥ उमा ३ १ ३ हल्लुल्लु ॥

पञ्च ॥

पञ्च ॥

पञ्च ॥

१ॐ नमोऽग्रेः चक्रसन्ध्याय ॥

॥ ॐ नमोऽग्रेः चक्रसन्ध्याय ॥

॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगुरुवन्दनमस्तु ॥ गुरुवन्दनमस्तु ॥ गुरुवन्दनमस्तु ॥
 एतच्चः गुरुवन्दनमस्तु ॥ गुरुवन्दनमस्तु ॥ गुरुवन्दनमस्तु ॥ गुरुवन्दनमस्तु ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 स्वस्ति ॥ ॥ यथा हि ॥ ॥ यथा हि ॥ ॥ यथा हि ॥ ॥ यथा हि ॥ ॥ यथा हि ॥ ॥ यथा हि ॥ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

७२
१

ॐ

सविधिनस्त्रयार्हः विप्रउत्सावनयायगा ॐ नमोः हगवत्पुष्पकमुत्राजाय
 नथगताया इह न सम्यक् वदयत यथागा ॐ पुष्परमहापुष्पसुपुष्पपुष्पाहवः
 पुष्पसम्पुष्पपुष्पापकिप्रनेस्त्राहम ॥ पूजाहयिया ॥ ॐ आहंरति
 यवज्जगत्समं हस्त्राहम ॥ स्त्रानकथक ॥ पाथिकात्रासुनयायगा ॐ सर्वपा
 पानपयेनेहं ॥ स्त्रानजउंखउंतिने ॥ ॐ ममिधनिवजीनीमहापुमिसवः वक्र
 सीसर्वसत्त्वानाकहंरुहस्त्राहम ॥ मिवसुनय ॥ ॐ वजसिन्धुवकनित्ताकह

१

म

खनेस्त्राहमावेतनमनुवसतिनकथमनंक्रिया ॥ ॐ वजादकहं ॐ वजाव
 मयहं ॥ धामलै ॐ थिय ॥ ॐ वज्ररुमहं ॐ वलखसुनखः सर्वनथगतवज्रमु
 वर्हजलक्षनस्त्राहमाथनलाह ॥ ननमगुलथिया ॥ ॐ दानं
 गवमयः सम्युथसदितं ॥ भीलवस ॥ माजनः कानिहृदः पिपिपिकाः
 नपनयं विष्कुकीयास्त्रापनः धामनंनक्रनः मकविलकवनं ॥ पुहपुखमजावा
 यतापावमिताः खउंवलरुनकुलामनिमगुलरवतुकनकवर्हः सर्वशकैहिनी

गुप्त
२

न

मूक गुप्तमनूज विमिष्टवदुदिफि काकि घन कनकसम धिजाय न वाजवस
सूगत वव गृह स्मिन्ः काय कर्मा निष्ठा ॥ ओं वज्र लखे गुल्ले सर्वे नथागतः ॥
धिष्ठाना धिनिष्ठु सुखा ॥ जा कि ॥ **सौं लखे मल्ल सहायक ॥**
ओं वज्र क विमल ललाट ॥ ओं वज्रः ॥ **सत्त्व सर्व विघ्न नृणां दय हं स्वाहा**
॥ सौं मल्ल उदय का वलितय ॥ ॥ ओं ह म ह म ध म म य न मः ॥ म ॥ ओं श्री
म ह म ध म म य न मः ॥ म ॥ ओं गुं गु व म ध म म य न मः ॥ म ॥ ओं र्य पूर्वः

२

मल्ल

विद्यलयाय नमः ॥ **प ॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥** **द ॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥**
॥ प ॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥ **उ ॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥** **॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥**
पाय नमः ॥ **॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥** **नमः ॥** **॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥**
मः ॥ **॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥** **॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥** **॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥**
लप नमः ॥ **॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥** **उ ॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥** **॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥**
॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥ **॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥** **॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥** **॥ ओं वज्र म धिपाय नमः ॥**

गु३
४

वा

भाशासर्ववृद्धनमस्यामिः धर्मकं जि न ला वि तं: संचयमिलसंपन्नः तत्र नयनम
स्तुतं। अत्र नयनमसर्वनं सर्वपुनिदसयामि। अत्र मादं जगत्सु त्वं वृद्धवाधिगहव
सः आवा रधे सवर्नं जाति वृद्धधर्म गहवमवा रधे विल कथा मखयप
नार्थपसिधमः। उपादयामि पत्रमं वववाधिरा त्रिका निमनुया नरु
सर्वसत्त्वानां वृक्षा तत्रिक वववाधिरा त्रिका वृक्षा त्वं हं जगभादिय॥ ॥ दस
नो सवपापा ना पृथ्वा नी वा नू मादनी कतां पु त्वं क विष्णामि त्रा र्था र्ही ग पा स्व

धमया वा वमृधनं जलिकि त्पा पमागम॥ प्रकृत्या जससा वयं पुहा र्था वयम
ननु नयं दमया मम नाथ ना मनु तल्लि तः। कतां जं विदुः। वरिष पुनि पुत्यप
नः पुनः। अत्र यं मम यं ननु पुनि मृकनु नायका नरुडकं मिदं ना
र्थं न कलिय पुनर्माया जथा मं तथा गताया आर्या इह न सं मा र्कं वृद्ध
हान्न न वृद्ध वृद्धा या न नि पस्य नि। तत्क सल मूलः जगति कं जनि कारं
यत्सु हा वं जल्ल कर्नं जया धर्म नया म विद्यतः तथा हं पत्रि ना मया मि समान

७३

जी

कालः लोकस्य इः स्वर्गस्य उग्रं च हवर्गं च कवर्गं च सदा तु सक्रिः तमपु
कार्मवः जरेव तान् दृष्टुं नो नृमृतिमारा मोवाः पृथक् नो आगमपा
गमोवाः सखा पुकालं जगमो हि नाय कृया सिंजुं शुभ्र संदिता
यः ॥ ओं श्रीं नमः नंपाक्रम नंप्रतिष्ठ स्वाहा ॥ वलिमलं तव
रावना ॥ ततोयं कालं नवायुमं तुलं त्रकालं नृमि मं तुलं नभायलि
ति उमै वृत्ति काया भीलमि पसराजनं ॥ विविगय ॥ नृगुहका विपत्रिनः ॥
कतो

वृं श्रीं जिं वै हं ॥ वॉं मॉं पॉं नॉं वॉं ॥ वं काल जा नः पं क्लम न पं क्ल पृथि पं पस्य नृ ॥
नृ उदि ला पाल मजायीः पाय नृ धीं नमः नंपाक्रम नंप्रतिष्ठ स्वाहा ॥ ॥
उं हं वं हा ॥ ॥ उं नृ काय स्वाहा ॥ ॥ उं यमाय स्वाहा ॥ उं वरुणाय स्वाहा ॥
उं कृव लाय स्वाहा ॥ उं नृ ग्रय स्वाहा ॥ उं नृ मलय स्वाहा ॥ उं वायु स्वाहा ॥
हा ॥ उं नृ अक्षय स्वाहा ॥ उं उं उं उं नृ मला स्वाहा ॥ उं सूर्याय स्वाहा ॥ उं विपत्य स्वाहा ॥
नृ उं नृ कृपा विपत्य स्वाहा ॥ उं नृ उं पृथिव्य स्वाहा ॥ उं नाग स्वाहा ॥ उं उं उं

रमाच
१

२

॥ क ए ॥ ॐ हं जय विजयाय हं ॥ हृदय ॥ ॐ वा व न दाय हं ॥ ना हो ॥ ॐ हा नृ र य प
दाय भू हं ॥ पा न ह य ॥ वा धि स त्व स्या ॥ नृ ग न्या स ॥ ॐ मे त्रि य स्त हा ॥ सि ल स ॥
ॐ हि नि ग हं हं ॥ स ए ॥ ॐ व ज य ॥ सि हं ॥ क र्त्तृ द य ॥ ॐ व ग हं हं ॥ ॥
ॐ ला क ष व हं ॥ न स न ॥ ॐ म र्त्त ॥ धा षा य हं ॥ म न सि ॥ ॐ स र्व नि वि क
क्रिय हं ॥ ना हो ॥ ॐ स म क र उ हं ॥ स र्वी ए ष ॥ ॐ हं नृ जि ता य हं ॥ द क्रि न वा ह ॥
ॐ हं नृ प या जि ता य हं ॥ वा म वा ह ॥ ॐ हं ॐ हं मा ल से न्य पु र्द ना य हं ॥ स ष ॥ ॐ हं

नृ का नृ न म स्य प्र म ना य हं ॥ हृदय ॥ ॐ ध न प्र षा य हं ॥ द क्रि न जा न्ना ॐ व स र्व वा य हं
॥ वा म जा नी ॥ ॐ नृ मि ता ल य स्वा हा ॥ ए ॥ ॐ नृ मा र्घी कृ सा य ज हं वं हा स्वा हा ॥ नृ
र य ॥ ॐ नि ना स ॥ ॥ प श्चा नि म नृ ॥ ली व द्वा ख य न्ना म वा की ॥ ॐ न मा व
जा य ॥ ॐ पि ष्व ह न व न इ ह न स म्य ॥ क र्त्तृ द य ॥ वि द्या व न न स प नृ स ग
न लो क वि द नृ रु वः प नृ षे द म्य सा व धि सा स्ता द वा नो र्क म नृ ष्या ना र्कः वृ द्वा ल ग वा
नृ त स्य वृ द्वा ल ग वा पृ ष्ठा म नृ ल नि र्था न या मि ॥ वृ द्वा ल ग वा ॥ १ ॥ ॐ न मा ध र्मा

इमाद्य
२

या॥ धर्मकुसुमगुणवर्दिनं साकुडपायिनं पावनिकीकिं न स्मधर्मत्रताय॥ ॐ दं
पूष्य॥ धर्मत्रताय ॐ दं पूष्यमलुनमनिर्योक्तयामि॥ धर्ममलुनम॥ २ ॥
ॐ नमो संद्याय साकि संद्यैः ॥ अना वलिकुले पुतिपन्नमः सकुदागम
मिरुलेः पुतिपन्नमसंद्यैः अहं ह लेः पुतिपन्नम अहं नयषसकग
वानः आर्यावलाकि नम्र वाधिसलसंद्यैः आहनिय पाहनिय समाकरनिय
॥ अंगकयसिया॥ अनुरुपं न्यक्रुदमनिय लाकस्य तस्मै संद्यत्रताय ॐ दं पूष्य

मं

१०

मलुननिर्योक्तयामि॥ संद्यमलुन॥ ३ ॥ ननपापदमनाकुर्यात् ॥ अनेवाको ॥
॥ ॥ अनादिनाति संसाधजन्मन्युं ववापनः जन्मयामलुनापायं कुरुं पायं का
लिनमववा ॥ १ ॥ यच्चानूमादिनं किंविनः दात्मशातायमाहिनः न
देनयंदसयामि पश्चात्तयनवाधि न॥ २ ॥ यत्तनुर्यदपकाया
मातापिरुष्वामिया गुनधनेषु याकुर्यात् कायवाकवृद्धिहिकुत॥ ३ ॥
अनेकदोषदूरे नमयापापनमाहिः यत्कुरुं दावूर्नपायैः तत्सर्वदसयामहं

हमाय
ॐ

वज्रपूर्यपुनिक्रुखाहा ॥ ११ ॥ ॐ विष्णु रत्नं तथैव गताय वज्रपूर्यपुनिक्रुखाहा
॥ १२ ॥ ॐ ककुद्दुडाय न तथैव गताय वज्रपूर्यपुनिक्रुखाहा ॥ १३ ॥ ॐ कनकमूनि
यन तथैव गताय वज्रपूर्यपुनिक्रुखाहा ॥ १४ ॥ ॐ कांक्षवाय यं तथै
गताय वज्रपूर्यपुनिक्रुखाहा ॥ १५ ॥ ॐ भक्तमूनि तथैव गताय वज्र
पूर्यपुनिक्रुखाहा ॥ १६ ॥ ॐ नमः सूर्यकिर्तिनामध्वयं तथैव गताय वज्रपूर्य
पुनिक्रुखाहा ॥ १७ ॥ ॐ समन्तावता सविजितः सूर्यमग्नी राजाय न तथैव

१३

जपूर्यपुनिक्रुखाहा ॥ १८ ॥ ॐ ब्रह्मकुडुञ्जगीय न तथैव गताय वज्रपूर्यपुनिक्रुखाहा
॥ १९ ॥ ॐ नृपतास्य स्व न राजाय न तथैव गताय वज्रपूर्यपुनिक्रुखाहा ॥ २० ॥
ॐ नृपतिरुत्तमैव रत्नं राजाय तथैव गताय वज्रपूर्यपुनिक्रुखाहा ॥
॥ २१ ॥ ॐ नमः विक्रान्तममिन्न
॥ २२ ॥ ॐ नृपतास्य वज्रपूर्यपुनिक्रुखाहा ॥ २३ ॥ ॐ पृथ्वीनाय वज्रपूर्यपुनिक्रुखाहा
॥ २४ ॥ ॐ दीपनाय वज्रपूर्यपुनिक्रुखाहा ॥ २५ ॥ ॐ दीपनाय वज्रपूर्य

१ माघ

आ

प्रतिष्ठाहा॥ वा ॥ ॐ गन्धनाय वज्रपूर्य्यं प्रतिष्ठाहा॥ ॐ ॥ न दार्ढ्यं
कालेषू॥ ॥ ॐ ॐ दायस्त्राधिप नय स्वाहा॥ १ ॥ ॐ यमो यपु नाधि
प नय स्वाहा॥ २ ॥ ॐ वरुणाधि
यकाधिप नय स्वाहा॥ ४ ॥ ॐ
ॐ नैऋत्याय धिप नय स्वाहा॥ ५ ॥ ॐ वायुवपव नाधिप नय स्वाहा॥ ७ ॥ ॐ
ॐ सानाय रूपाधिप नय स्वाहा॥ ८ ॥ ॐ सलशसिलिशकलरपवशरुलरहार

१४

जीर्जिं हिं हं हं अकालवक्रवसः धवश्रिधिरधुश्रनवश्रमवश्रवसीसनस्य
प्रतिमदिनसुनिर्वाः कलशनपरहगवनसीमायाय नमः ॐ नुजमववक्षकव
कषासिगक्षयदानपतिः सकलज
रुगि ३ आर्यावलोकितेश्वरदवना
हा॥ ॥ धनमनुलसर्कथधपूजायाया॥ धडाशसर्द्धालवन॥ धडाशचिकना
यायनरुलः मलः नलः ॐ त्यादिद्याया ॐ लावयाया॥ ॥ धनराजपूजाया

१०५

तमस्तु लघियकः किं वदन्त मे ॥ ॐ आः हूं श्रीमन् ब्रजसत्त्वगुर्वनव
नृजकमलायः सभाह्वा नवरा सनकबायः नमः हूं नमस्तु नमो नमः तस्मा
हं त्वान्न मस्यामिः शागुर्वस्यथपुमि ॥ ॐ सर्वहृद्वा नमस्तु जग
ओहं जगदर्थपुसादिकैः विनाम निविदः तनं श्रीसत्त्वर्त्तनमस्तु
न ॥ ॥ वाफविश्वमहाह्वानः सर्वात्मनिसपाहि नारायणोऽहं महायान
श्रीसत्त्वर्त्तनमस्तु ॥ ॥ नत्वा श्रीवज्रवादिः मन्त्रमूक्तिजिन्मयीः शूर्यना

ॐ

ॐ

वदन्ती माः अविमिदिवलपदा ॥ ॐ वं कालसमासीलः सहजानन्दपिपी
यह्वाह्वानादहाय नस्तु श्रीवज्रयोगिनी ॥ आनि अमहा मन्त्रं दनमस्तु श्रीव
ज्रयोगिनी ॥ सयोगं वदन्ती सर्व ह्यनपभावकमालविधं समिध
विनमस्तु श्रीयोगं वदन्ती मास्तु ॥ ॥ त्रुवनिनिहितवामजानः सर्व
हस्तं श्रुत्वा न विनवन्त मतीः नर्जनि सक्तिप्राप्तानि विष्टयनसविलच
नुदः चतुश्चक्रसमहितरुवविष्टविष्टरुकावमस्तु ॥ ॥ त्रुद्वन्द्वस्तु

नोदवी

ॐ

नोदवीः अरु विक्रि निवात्री नी अरु हं वसंशु कं अरु मा प्रिक प्रम मा मिः
 हं ॥ ॐ उदया महा विना ला क पा ला महा ई का की वर्यं रुद म कोट वि
 प्रहर्नानमस्तु नं ॥ ॥ धन ॥ उं म ना कु ल ॐ न्यादि ॥ ॥
 क्रमा क्राना ॥ ॥ अ पा फ व पुः ॥ हाना दि ॥ स क व म या वि ताः
 यत्न नम वि क ना थः त स र्व क रु म त सि क रुः म हं रुः स वृ द्वा न त स ता व या
 वं मा आ ला क पा ना म्भः जा नि हः र ना निः वि धि की या सा नि के प रि र्क

१५

दान पति अ न्द्या य मं ॥ ॥ यत्न नं इ ल्क नं कि किं ल्प या म् रु धि या म नं ॥
 कं न व र्क ना या ना थ ज द ता ना सि द हि ता ॥ यत्न न का य ज न्पा र्पः ये ल्क नं
 वि ल्क ज न्पा र्पः ये ल्क न वा क य न्पा र्प ॥ न स र्व द म या मि न मा
 लु नं वृ द्ध अ न क ग व व ला ये ॥ स र्व व का र्था स रु ला र व न्कु न क र्मा
 प्र सि ध य न मं ग्ध वः प न म्भ वी ॥ ॥ ध न म लु ल वि स र्ज न या य ॥ ॥
 क ता व स र्व स त्वा र्थः सि ध न त्वा य थ नू मः ग क र्ध वा धि वि ख ला यः ग म न्ता

॥ ॐ ॥

यउहंःआडौ वऊ मलुलं मू॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ तिअ मा पा म मउ ल

परि समा फः ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ शुहमंगलं हवउ सर्वदोका तं भुह ॥ ॐ ॥

ASIAN ARCHIVES

2863

ॐ ॥ ॐ ॥

